

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 22: कुरु वंश

4 October 2026



जब अश्वत्थामा का धधकता ब्रह्मास्त्र माता के गर्भ में कुरुओं के अन्तिम उत्तराधिकारी को संकट में डालता है, तब केवल भगवान् कृष्ण की शक्ति से ही अजन्मे परीक्षित मृत्यु से जीवित बचाए जाते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह बाईसवाँ अध्याय अजमीढ से उतरे महान् वंशों का अनुसरण करता है — पांचाल, कुरु, एवं मगध के राजा — वही वंश जो महाभारत के नायकों में खिलता है। शुकदेव राजा परीक्षित को कुरुक्षेत्र के स्वामी कुरु का वंश; देवापि की कथा, जो कलापग्राम को चले गए एवं एक दिन चन्द्रवंश को पुनर्जीवित करेंगे; भीष्म का अवतार, महान् आत्मसंयमी भक्त; और कृष्ण-द्वैपायन व्यास का जन्म, श्री हरि के एक अंश, जिन्होंने वेदों की रक्षा की एवं संसार को यही भागवत दिया — का वर्णन करते हैं। यह विचित्रवीर्य की, धृतराष्ट्र एवं पाण्डु की, पाँच पाण्डवों एवं उनके पुत्रों की, और किस प्रकार स्वयं अजन्मे परीक्षित भगवान् कृष्ण की शक्ति से बचाए गए, की बात कहता है। यह अध्याय एक वंश की महान् नदी, उसमें प्रकट होने वाली दिव्य आत्माओं, और उस भगवान् के विषय में है जो वेदों एवं अपने भक्तों दोनों की रक्षा करते हैं।

अध्याय-पारेचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 22 (द्वाविंश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: अजमीढ के वंशज
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: चन्द्रवंश में पांचाल, कुरु एवं मगध के राजाओं के वंश
- केन्द्रीय विषय: अजमीढ के वंशज पाण्डवों एवं राजा परीक्षित तक, देवापि, भीष्म, व्यास, एवं आने वाले राजाओं सहित
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 22, श्लोक 1-49
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पांचाल एवं कुरु का वंश

शुकदेव ने कथा आगे बढ़ाई। दिवोदास से मित्रेयु हुए, और उस वंश से सोमक, जिनके सबसे छोटे पुत्र पृषत द्रुपद के पिता थे, जिनकी सन्तान धृष्टद्युम्न एवं अन्य, तथा द्रौपदी थीं। ये पांचाल थे। अजमीढ के एक अन्य पुत्र से चली एक पृथक् शाखा में, उनके उत्तराधिकारी ने स्वयं सूर्यदेव की पुत्री से विवाह किया, और इसी मिलन से उस वंश को उसका सबसे विख्यात नाम-धारक मिला — कुरुक्षेत्र के संस्थापक स्वामी।

योऽजमीढसुतो ह्यन्य ऋक्षः संवरणस्ततः ।

तपत्यां सूर्यकन्यायां कुरुक्षेत्रपतिः कुरुः ॥ ४ ॥

yo 'jamīḍha-suto hy anya ṛkṣaḥ saṁvaraṇas tataḥ tapatyāṁ sūrya-kanyāyāṁ kurukṣetra-patiḥ kuruḥ

अर्थ: अजमीढ के एक अन्य पुत्र ऋक्ष से संवरण हुए, और उनसे, सूर्य-कन्या तपती के द्वारा, कुरुक्षेत्र के स्वामी कुरु हुए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 22, श्लोक 4)



अजमीढ के वंश से राजा कुरु उत्पन्न होते हैं, पवित्र कुरुक्षेत्र-भूमि के स्वामी, जो महान् कुरु वंश को अपना नाम देते हैं — वह वंश जो महाभारत के नायकों में खिलेगा (श्लोक 3-4)।

कलापग्राम में देवापि

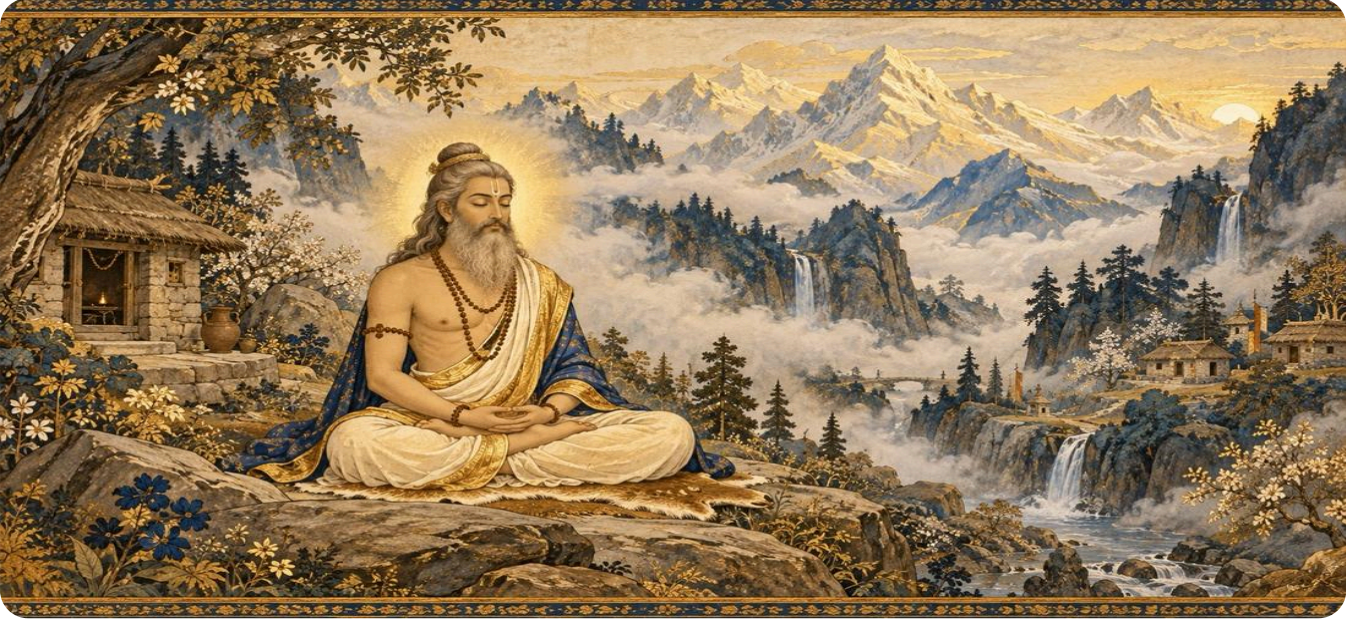
वंश अनेक राजाओं के माध्यम से प्रतीप तक आगे बढ़ा, जिनके पुत्र देवापि, शान्तनु एवं बाह्लीक थे। देवापि ने सिंहासन पर अपना दावा त्याग दिया; और, वेदों के मार्ग से विचलित होकर, वे योग में लग गए एवं कलापग्राम में बस गए।

एवमुक्तो द्विजैर्ज्येष्ठं छन्दयामास सोऽब्रवीत् ।
तन्मन्त्रिप्रहितैर्विप्रैर्वेदाद् विभ्रंशितो गिरा ॥ १६ ॥
वेदवादातिवादान् वै तदा देवो ववर्ष ह ।
देवापिर्योगमास्थाय कलापग्राममाश्रितः ॥ १७ ॥

evam ukto dvijair jyeṣṭhaṁ chandayām āsa so 'bravīt tan-mantri-prahitair viprair vedād vibhramśito girā veda-vādātivādān vai tadā devo vavarṣa ha devāpir yogam āsthāya kalāpa-grāmam āśritaḥ

अर्थ: ब्राह्मणों द्वारा कहे जाने पर, शान्तनु ने अपने बड़े भाई को सिंहासन प्रस्तुत किया; किन्तु देवापि, मन्त्री द्वारा भेजे ब्राह्मणों के वचनों से वेदों से विचलित होकर, वेद-शिक्षा के विरुद्ध बोल बैठे — जिस पर वर्षा-देव ने वर्षा भेजी। तब देवापि योग में लग गए एवं कलापग्राम में बस गए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 22, श्लोक 16-17)

वहाँ, शुकदेव ने कहा, देवापि अभी भी वास करते हैं; और जब कलियुग में चन्द्रवंश लुप्त हो जाएगा, तब वे आने वाले सत्ययुग के आरम्भ में उसे पुनर्जीवित करेंगे।



अपना सिंहासन त्यागकर, शान्तनु के बड़े भाई देवापि योग में लग जाते हैं एवं गुप्त कलापग्राम में वास करते हैं — एक जीवित बीज के समान रखे गए, एक नए युग के आरम्भ में चन्द्रवंश को पुनर्जीवित करने हेतु (श्लोक 16-18)।

भीष्म, महान् भक्त

शान्तनु राजा बने, और गंगा देवी से उनके पुत्र भीष्म थे — पूर्ण आत्मसंयमी, धर्म के ज्ञाताओं में श्रेष्ठ, भगवान् के महान् भक्त एवं आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध।

सोमवंशे कलौ नष्टे कृतादौ स्थापयिष्यति ।

बाह्लीकात्सोमदत्तोऽभूद् भूरिभूरिश्रवास्ततः ॥ १८ ॥

शलश्च शान्तनोरासीद् गङ्गायां भीष्म आत्मवान् ।

सर्वधर्मविदां श्रेष्ठो महाभागवतः कविः ॥ १९ ॥

soma-varṁśe kalau naṣṭe kṛtādau sthāpayiṣyati bāhlikāt somadatto 'bhūd bhūrir bhūriśravās tataḥ śalaś ca śāntanor āsīd gaṅgāyāṁ bhīṣma ātmavān sarva-dharma-vidāṁ śreṣṭho mahā-bhāgavataḥ kaviḥ

अर्थ: (देवापि) कलि में चन्द्रवंश के लुप्त होने पर उसे पुनः स्थापित करेंगे। बाह्लीक से सोमदत्त हुए, और उनसे भूरि, भूरिश्रवा एवं शल। और शान्तनु के गंगा देवी से पुत्र भीष्म थे — आत्मसंयमी, धर्म के ज्ञाताओं में श्रेष्ठ, भगवान् के महान् भक्त, एवं प्रबुद्ध। (नवम स्कन्ध, अध्याय 22, श्लोक 18-19)



राजा शान्तनु एवं गंगा देवी के पुत्र भीष्म पूर्ण आत्मसंयम के पुरुष, धर्म के ज्ञाताओं में श्रेष्ठ एवं भगवान् के महान् भक्त के रूप में प्रकट होते हैं (श्लोक 18-19)।

व्यास, श्री हरि के एक अंश

सत्यवती से शान्तनु के दो पुत्र, चित्रांगद एवं विचित्रवीर्य हुए। किन्तु अपने विवाह से पूर्व, ऋषि पराशर के द्वारा, सत्यवती ने स्वयं श्री हरि के एक अंश को ऋषि कृष्ण-द्वैपायन — व्यास — के रूप में जन्म दिया था, वेदों के रक्षक, जिनसे स्वयं शुकदेव ने भागवत प्राप्त किया।

विचित्रवीर्यश्चावरजो नाम्ना चित्राङ्गदो हतः ।

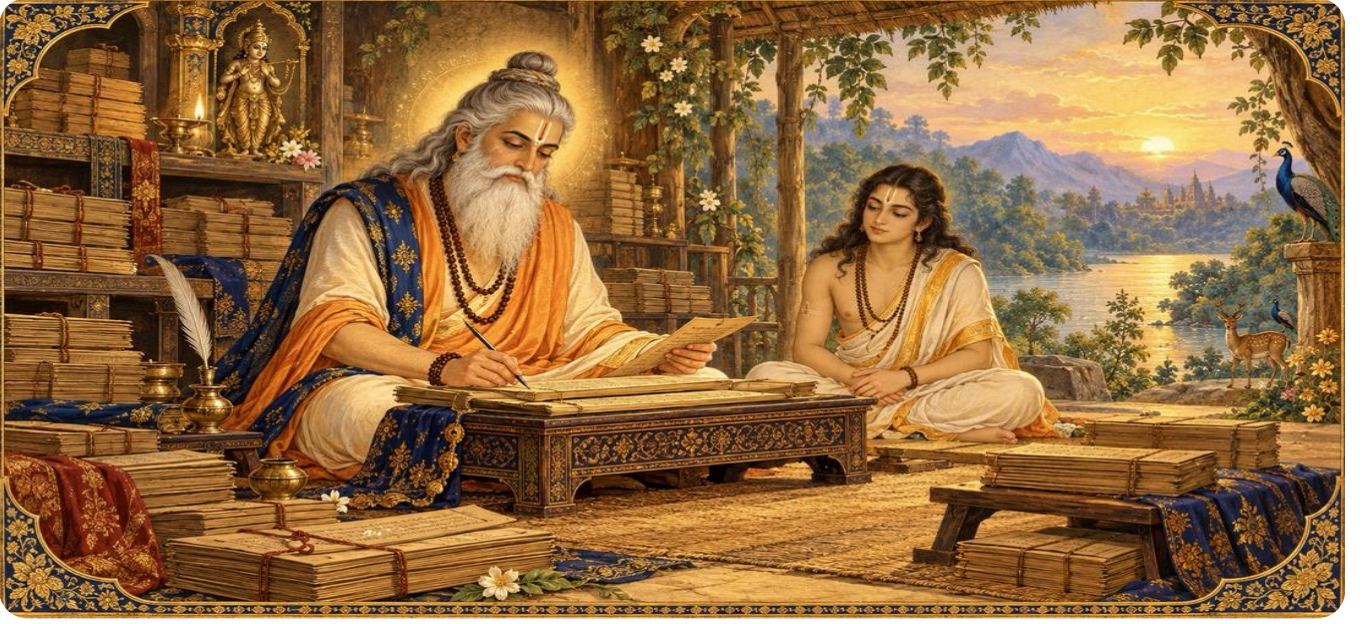
यस्यां पराशरात् साक्षादवतीर्णो हरेः कला ॥ २१ ॥

वेदगुप्तो मुनिः कृष्णो यतोऽहमिदमध्यगाम् ।

हित्वा स्वशिष्यान् पैलादीन्भगवान् बादरायणः ॥ २२ ॥

*vicitravīryaś cāvarajo nāmnā citrāṅgado hataḥ yasyām parāśarāt sākṣād avatīrṇo hareḥ kalā
veda-gupto muniḥ kṛṣṇo yato 'ham idam adhyagām hitvā sva-śiṣyān pailādīn bhagavān
bādarāyaṇaḥ*

अर्थ: चित्रांगद मारे गए, और विचित्रवीर्य उनके छोटे भाई थे। सत्यवती के द्वारा, ऋषि पराशर से, श्री हरि के एक अंश ने ऋषि कृष्ण (कृष्ण-द्वैपायन) के रूप में अवतार लिया, वेदों के रक्षक, जिनसे मैंने यह भागवत सीखा; क्योंकि दिव्य बादरायण ने यह परम रहस्य अपने पुत्र मुझे, अपने शिष्यों पैल आदि की अपेक्षा में, सिखाया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 22, श्लोक 21-22)



ऋषि कृष्ण-द्वैपायन व्यास — श्री हरि के एक अंश — शाश्वत वेदों को चार में विभाजित करके उनकी रक्षा करते हैं, और संसार को श्रीमद्भागवत देते हैं, जो उन्होंने अपने पुत्र शुकदेव को सिखाया (श्लोक 21-22)।

पाण्डव एवं उनके पुत्र

व्यास ने, अपनी माता की आज्ञा से, धृतराष्ट्र, पाण्डु एवं विदुर को उत्पन्न किया। धृतराष्ट्र के सौ पुत्र थे, दुर्योधन सबसे बड़ा, एवं एक पुत्री, दुःशला। पाण्डु ने, एक शाप से रोके जाने पर, अपनी पत्नी कुन्ती के द्वारा तीन शक्तिशाली पुत्र प्राप्त किए — युधिष्ठिर, भीम एवं अर्जुन, धर्म, वायु एवं इन्द्र से — और माद्री के द्वारा नकुल एवं सहदेव अश्विनी देवों से; और द्रौपदी के द्वारा पाँचों पाण्डवों में से प्रत्येक का एक-एक पुत्र हुआ।

शापान्मैथुनरुद्धस्य पाण्डोः कुन्त्यां महारथाः ।

जाता धर्मानिलेन्द्रेभ्यो युधिष्ठिरमुखास्त्रयः ॥ २७ ॥

नकुलः सहदेवश्च माद्र्यां नासत्यदस्रयोः ।

द्रौपद्यां पञ्च पञ्चभ्यः पुत्रास्ते पितरोऽभवन् ॥ २८ ॥

śāpān maithuna-ruddhasya pāṇḍoḥ kuntyām mahā-rathāḥ jātā dharmānilendrebhyo yudhiṣṭhira-mukhās trayaḥ nakulaḥ sahadevaś ca mādryām nāsatya-dasrayoḥ draupadyām pañca pañcabhyaḥ putrās te pitaro 'bhavan

अर्थ: पाण्डु की पत्नी कुन्ती के द्वारा, तीन महारथी — युधिष्ठिर, भीम एवं अर्जुन — धर्म, वायु एवं इन्द्र से उत्पन्न हुए; और माद्री के द्वारा, नकुल एवं सहदेव दोनों अश्विनी देवों से; और द्रौपदी के द्वारा, पाँचों पाण्डवों में से प्रत्येक ने एक-एक पुत्र उत्पन्न किया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 22, श्लोक 27-28)



पाँच नेक पाण्डव भाई — युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल एवं सहदेव — पाण्डु के पुत्र, कुरु वंश के पुष्प एवं युग के महान् नायक के रूप में खड़े हैं (श्लोक 27-28)।

कृष्ण द्वारा परीक्षित की रक्षा, एवं आने वाले राजा

अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से, उत्तरा के द्वारा, स्वयं राजा परीक्षित उत्पन्न हुए। जब समस्त कुरु नष्ट हो चुके थे एवं अजन्मे परीक्षित अश्वत्थामा के धधकते ब्रह्मास्त्र से संकट में थे, तब भगवान् कृष्ण की शक्ति से ही वे मृत्यु से जीवित बचाए गए।

परिक्षीणेषु कुरुषु द्रौणेर्ब्रह्मास्त्रतेजसा ।

त्वं च कृष्णानुभावेन सजीवो मोचितोऽन्तकात् ॥ ३४ ॥

parikṣīṇeṣu kuruṣu drauṇer brahmāstra-tejasā tvaṁ ca kṛṣṇānubhāvena sajīvo mocito 'ntakāt

अर्थ: जब कुरु सब नष्ट हो चुके थे एवं आप द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा के धधकते ब्रह्मास्त्र से संकट में थे, तब आप भी, कृष्ण की शक्ति से, मृत्यु से जीवित बचाए गए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 22, श्लोक 34)

तत्पश्चात् शुक्रदेव ने परीक्षित के अपने पुत्रों, जनमेजय एवं अन्य के नाम बताए, और पूरु के वंश में क्षेमक तक आने वाले राजाओं की भविष्यवाणी की, जिनके साथ यह वंश कलियुग में समाप्त होगा, इसके पूर्व कि वे मगध के आने वाले राजाओं की ओर मुड़ें।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् की योजना पीढ़ियों की एक महान् नदी के माध्यम से बहती है। अजमीढ से पांचाल, कुरु एवं मगध के राजा उत्पन्न होते हैं — वह विशाल वंश जिसमें भगवान् का अपना अवतार एवं युग की महान् घटनाएँ प्रकट होंगी (श्लोक 1-4)।
2. भगवान् प्रत्येक युग में एक बीज सुरक्षित रखते हैं। जैसे सूर्यवंश के मरु कलापग्राम में प्रतीक्षा करते हैं, वैसे ही चन्द्रवंश के देवापि, अपने वंश को, जब वह चला जाए, पुनर्जीवित करने हेतु रखे गए। पवित्र कभी पूर्णतः खोया नहीं जाता (श्लोक 16-18)।

3. महान् भक्त संसार के कार्यों के भीतर प्रकट होते हैं। भीष्म, पूर्ण आत्मसंयम के पुरुष एवं महान् भक्त, और व्यास, श्री हरि के एक अंश जिन्होंने वेदों की रक्षा की, वंश के भीतर इस स्मरण के रूप में चमकते हैं कि भगवान् अपने जनों को इतिहास के मध्य में भेजते हैं (श्लोक 19-22)।

4. स्वयं भगवान् अपने भक्तों की रक्षा करते हैं। परीक्षित, कुरुओं के अन्तिम उत्तराधिकारी, गर्भ में कृष्ण की शक्ति से बचाए जाते हैं। भगवान् अपने जनों की रक्षा करते हैं, सबसे घातक अस्त्रों से भी (श्लोक 34)।

5. सबसे बड़े वंश भी समाप्त होते हैं; केवल भगवान् टिकते हैं। देवताओं एवं ऋषियों द्वारा सम्मानित पूरु का वंश, कलियुग में अपने अन्त को प्राप्त होगा। प्रत्येक पार्थिव वंश काल के अधीन है, और केवल भगवान् शाश्वत हैं (श्लोक 44-45)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यह अध्याय, अपनी सतह पर, नामों की एक सघन सूची है — किन्तु इसके भीतर समस्त शास्त्रों की कुछ सर्वाधिक देदीप्यमान आकृतियाँ विचरण करती हैं, और इसके माध्यम से एक ही स्वर्णिम सूत्र बहता है: इतिहास के प्रकटीकरण के भीतर भगवान् की निरन्तर उपस्थिति। यहाँ व्यास हैं, श्री हरि के एक अंश, जिन्होंने शाश्वत वेदों की रक्षा की एवं संसार को यही भागवत दिया; यहाँ भीष्म हैं, जिनका आत्मसंयम एवं भक्ति उन्हें युग की महान् आत्माओं में से एक बनाते हैं; यहाँ देवापि हैं, योग में छिपे, अपने वंश को उसका समय आने पर पुनर्जीवित करने हेतु। और यहाँ, सबसे कोमलता से, परीक्षित हैं — वही राजा जो यह वृत्तान्त सुन रहे हैं — एक अजन्मे शिशु के रूप में उस अस्त्र से बचाए गए जिसने बाकी सबको नष्ट कर दिया था, केवल कृष्ण की शक्ति से। इस विचार में कुछ गहराई से मर्मस्पर्शी है कि श्रोता का अपना जीवन, और स्वयं इस संवाद का अस्तित्व, पूर्णतः भगवान् की रक्षक कृपा पर टिका है। भागवत हमें स्मरण कराता है कि हम भी प्रत्येक भगवान् द्वारा नियत एक वंश की एक कड़ी हैं, कि महान् आत्माएँ पवित्र की रक्षा हेतु हमारे बीच प्रकट होती हैं, और कि हमारे अपने जीवन, परीक्षित के समान, क्षण-क्षण भगवान् के रक्षक हाथों में थमे हैं। वंश उठते एवं गिरते हैं, किन्तु जो भगवान् अपने भक्तों की रक्षा करते एवं अपने वचन को सुरक्षित रखते हैं, वे शाश्वत हैं, और उनकी शरण लेना ही, परीक्षित के समान, स्वयं मृत्यु से जीवित बचाया जाना है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, गर्भ में बचाए गए परीक्षित की भावना में, भगवान् की रक्षक कृपा की शरण लें। अपने ही जीवन में एक ऐसे समय का स्मरण करें जब आप किसी संकट या कठिनाई से बच गए, और उसमें, जैसे परीक्षित ने किया, भगवान् के छिपे हाथ को पहचानें; उन्हें इस प्रार्थना के साथ अपनी कृतज्ञता अर्पित करें, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” फिर, जैसे यह अध्याय करता है, उन महान् आत्माओं एवं पवित्र शास्त्र का सम्मान करें जो पीढ़ियों के माध्यम से आप तक पहुँचे हैं: व्यास द्वारा हमारे लिए सुरक्षित भागवत का थोड़ा पढ़ें या सुनें, और उन गुरुओं की अखण्ड श्रृंखला के लिए धन्यवाद दें जिन्होंने इसे आपके अपने युग तक पहुँचाया। भगवान् की रक्षा एवं उनके सुरक्षित वचन के लिए कृतज्ञता आपका अभ्यास बने, यह स्मरण करते हुए कि आप भी क्षण-क्षण उनकी देखरेख में थमे हैं।

उपसंहार

यह अध्याय एक सम्पूर्ण वंश-शाखा में हमें पीढ़ी-दर-पीढ़ी नीचे ले गया है, जब तक कि नाम मात्र वंशावली न रहकर जीवन्त साक्षी बन गए: एक राजवंश केवल रक्त एवं उत्तराधिकार नहीं बल्कि वह रंगमंच है जिस पर भगवान् शान्तिपूर्वक अपने ही जनों को स्थापित करते हैं — एक छिपा हुआ योगी युगों की प्रतीक्षा करता, एक आत्मसंयमी भक्त राजवंश में जन्म लेता, एक ऋषि संसार को शाश्वत शास्त्र देता, और अन्त में एक

अजन्मा उत्तराधिकारी मरणासन्न वंश की अन्तिम साँस में भी बचा लिया जाता है। इन सभी सूत्रों के भीतर एक ही सत्य चमकता है — इतिहास कभी संयोग के हवाले नहीं छोड़ा जाता, क्योंकि भगवान् स्वयं उसके भीतर विचरण करते हैं, जो पवित्र है उसकी रक्षा करते हुए एवं जो उनका है उसे बचाते हुए, चाहे मृत्यु ही क्यों न निकट आ चुकी हो।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

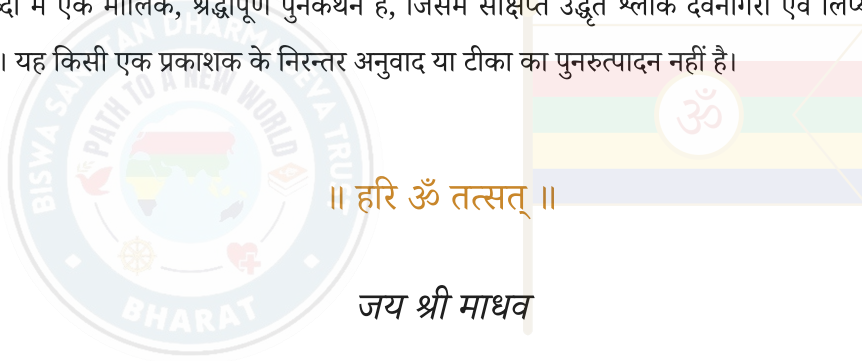
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम स्कन्ध, द्वाविंश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञम · विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है।



ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-22-descendants-of-ajamidha-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट